मृनमय मूरबक नेह

सीता वजित छथि

अन्तः सलिला

किस्त २

सम्पादकीय

स्वातीक हेमर अंक पाठकक बीच बेस लोकप्रिय भेल आ आशा जगा गेल जे ई फुलायत, फड़त। तथापि किछु कारणवश चारिम अंक विलम्बसँ प्रकाशित भऽ सकल, एहि हेतु क्षमाप्रार्थी छी।

विद्यापति-स्मृति पर्वक ठाम-ठाम आयोजनक समाचार भेटब आरम्भ भऽ गेल अछि। ध्यान-रखबाक थिक जे एहि आयोजनकेँ मात्र नाच-गानक केन्द्र स्थल नहि अपितु कर्म-भूमि बनाबी, जतयसँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक कल्याणक दिशामे किछु ठोस कार्य भऽ सकय। आपसी भेदभाव, गुटबाजी आदिकेँ समाप्त कऽ देबा देबाक अछि जे जागरूकता मे हमरा लोकनि कतहु पाछाँ नहि छी। मैथिली साहित्यकार, पाठक, अध्यापक, छात्र ओ शुभेच्छु जँ अपन-अपन क्षेत्रक संस्थासँ सम्पर्क कऽ किछु प्रभावकारी कार्यक दिशामे प्रवृत्त होथि तऽ विशेष उपयोगिताक वस्तु सिद्ध भऽ सकत। ~~व्यक्तिगत स्वार्थ ओ मतभेद संस्थाकेँ कमजोर~~ ~~भऽ सकत।~~ व्यक्तिगत स्वार्थ ओ मतभेद संस्थाकेँ कमजोर बनबैछ, तेँ एकर परित्याग सर्वथा आवश्यक। वस्तुतः महाकवि विद्यापतिक प्रति हमरा लोकनिक श्रद्धाञ्जलि सार्थक भऽ सकत जँ प्रतिव्यक्ति वर्षमे दुइयो टा काज मन पाड़ब करबाक संकल्प लो आ ओकरा क्रियान्वित कऽ सकी।

स्वातीक अग्रिम अंक कथा विशेषांक होयत। सभ कलाकार लोकनिसँ सादर निवेदन जे १० जनवरी तक अपन रचना पठाय सहयोग देबाक कृपा करथि।

सम्पादक कमला चौधरी	सहयोग मुरलीधर झा प्रवेश रतन

त्रैमासिक

मुजफ्फरपुर

साहित्यिक ओ पारिवारिक पत्रिका

विषय-वस्तु—
बम्बईक डायरीक
पृष्ठ भूमि
चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
गजल—
महेन्द्र
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
कथा—
रमानन्द रेणु
उषा किरण खान
कविता—
केदार कानन
सुधांशु 'पाथ्य'
सुशीला झा
समीक्षा—
डॉ० भीमनाथ झा
नीरजा रेणु
चिन्तन, कहुअनि पीसी, ...इन, बाल-गोपाल ...बॉट, सबरंग एवं अन्य स्तम्भ।

कार्यालय
स्वाती
प्रकाश भवन
... (... रोड)
... चौक, मु०
स्वाती
...पुर (... रोड)
... दरभंगा

सम्पादकीय

मैथिली पत्र-पत्रिका बन्द भऽ जयबाक कारण सभके भोगि रहल छी। स्थिति वास्तवमे भय.वह अछि। भाषण देबयवला महानुभाव सभ वास्तविक धरातल पर कतय लोप भऽ जाइत छथि, से नहि जानि! पहिलो अंकक प्रकाशनमे जे खर्च लागल से आपस नहि भऽ सकल दोसर अंकक तऽ कथे नहि। एहना स्थितिमे तेसर अंकक प्रकाशन माँ मैथिलीक कृपा मात्र कहल जा सकैछ।

पाठकक स्थिति यैह अछि जे जँ मँगनी भेटि जानि तऽ मैथिली पत्रिका पढ़ि सकैत छथि (से दिग्गज महानुभाव सभ) मुदा जँ किनबाक बात हो तऽ बहुत पत्रिका छै ‥ नूतन कहानियाँ, सत्यकथा, मायापुरी, माधुरी। एहन महानुभाव सभ सँ सहयोगक याचना कयल जाय तऽ दू पंक्तिक वचनामृत सेहो भेटि सकैछ जे 'प्रचारक हेतु किछु मँगनी बाँटू'। निचोड़ यैह जे घर डाहि आगि तापू।

अस्तु, स्थितिसँ चिन्तित छी, निरुत्साहित नहि। लेखक, पाठक आ सहयोगी वृन्दक सक्रिय सहयोगक याचना करैत तेसर अंक लऽ उपस्थित छी। सहयोगी बन्धुवर पत्राचार राखथि, से सादर आग्रह।

सम्पादक
कमला चौधरी

सहयोग
मुरलीधर झा
भवेश
रतन

ली त्रैमासिक

मई-जुलाई '८५

मुजफ्फरपुर

साहित्यिक ओ पारिवारिक पत्रिका

सम्पादकीय

नव वर्ष अनेकानेक परिवर्तनक संग उपस्थित भेल अछि। यथास्थितिवादी अथवा परम्परावादी व्यक्ति नव परिवर्तनसँ डराइत ओ टेढ़ करैत छथि। पहिलेसँ जकर ओ अभ्यस्त छथि, ओ एहू बात हुनका पसिन पड़ैत छनि। एहन व्यक्ति सबहक पाछाँ दृष्टि जाइत छथि। किछु व्यक्ति पुनरुत्थानवादी होइत छथि जे पुरान मे वस्तुमे गुण ओ सौन्दर्यक दर्शन करैत नव परिवर्तनकेँ सहजतापूर्वक ग्रहण करैत छथि। प्राचीनताक प्रति हुनक आस्था, एतेक दृढ़ ओ अडिग होइत अछि जे वर्तमानमे होमयवाला नवसँ नव परिवर्त्तन ओ उपलब्धिक सम्बन्धमे कहैत सुनल जाइत छथि कि हमरा देशमे ई सब पहिनहि भऽ चुकल अछि।

बात ई अछि जे जन्म आओर मृत्यु संसारक नियम थिक। जे वस्तु उत्पन्न होइत अछि, ओ बालू चलि कऽ पुरान भऽ मृत्युकेँ प्राप्त करैत अछि मुदा पुरान वस्तुक स्थान लेबार नव वस्तु कऽ लैत अछि। एहि नवीनताक जन्म पुरानेमेसँ होइत छैक। तेँ ई सिद्ध होइछ जे प्राचीनता ओ नवीनतामे घनिष्ठ सम्बन्ध छैक प्राचीनताक अनुपयोगी तत्वक परित्याग कऽ नवीनता ओकर जीवन्त तत्वकेँ ग्रहण कऽ लेत अछि आओर एहि तरहेँ एकटा नव शक्तिक जन्म होइछ। विकास एवं प्रगति ई ऐतिहासिक नियम थिक। तेँ नवीनताक विरोध इतिहास आ ओकर नियमक विरोध होइत।

युग-युगसँ मुँहबर पड़ल ताला आ विवशताक जालसँ बाहर आबि कऽ आधुनिक स्त्री-समाज अपन शक्ति आ अबलाक अधिकारक उपयोग करबाक क्षमता प्राप्त कऽ किछु वर्गकेँ अन्तर्गत सुझायब स्वाभाविक। मुदा कोनो तरहक बाद ओ पवनें बिरत भऽ जे किछुओ महिला लेखन क्षेत्रमे आगाँ अबैती तँ मैथिली साहित्यक हेतु देन योगदान सिद्ध होएत। अस्तु, पहिला कटु मधु घटना ओ अवस्थाकेँ बिसरि नव आशा ओ उत्साहक संग नववर्षक अभिनन्दन करी आ बढ़ैत चली कर्मक्षेत्र पर आगाँ आर आगाँ ……

सम्पादन	संचालन	प्रबन्धक
कमला चौधरी	रमण कुमार	प्रबोध चन्द्र, कुमार रतन

कार्यालय

स्वाती
प्रकाश भवन
रमना (क्लब रोड)
पानी टंकीचौक, मुजफ्फरपुर

स्वाती
बलभद्रपुर (बेला रोड)
लहेरियासराय, दरभंगा

[मै]थिली त्रैमासिक

स्वाती

मुजफ्फरपुर

साहित्यिक ओ पारिवारिक पत्रिका

श्रीमती योगमाया देवीक यशस्वी पति स्व० श्रीलाल दासक नामसँ मिथिलाक कोन घर नहि परिचित अछि ? 'मिथिला-दर्पण' एवं अन्य अनेक उपाधिसँ हुनका अलंकृत कऽ समस्त मिथिला आ मिथिलाक प्रबुद्ध समाज हुनक सम्मान केलनि। १९७० ई० मे श्रीलाल दासक दिवंगत भेलाक बाद हुनका 'मिथिला विभूति'क रूपमे श्रद्धाञ्जलि देल गेल जे दुर्लभ आ अभूतपूर्व अछि। वस्तुतः श्री मैथिलीक जे सेवा कयलनि से मैथिल साहित्यक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे अंकित अछि आ रहत। हुनक हिन्दी-सेवा सेहो तहिना महत्वपूर्ण छल जाहि हेतु बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद्, पटना ताम्रपत्र दऽ कऽ पहिनहि हुनक सम्मान कऽ चुकल छल। ओहि अमर विभूतिक सहधर्मिणी छथि श्रीमती योगमाया देवी। ओ ओहि समयमे अपन राष्ट्रीय, साहित्यिक एवं सामाजिक क्रिया कलापसँ मिथिलाकेँ आलोकित कयलनि जखन समाजमे चारू दिस जड़ता आ अचेतनताक साम्राज्य छल। मैथिल ललना लोकनि तँ सुतले छलीह। ओ महिलाकेँ शिक्षित करब हिनक कार्यक एक प्रमुख अंग बनि गेल। ओ सर्वांगीण बोध शिक्षा-प्रसारक कार्यमे तावत् धरि लागल रहलीह यावत् हिनका मिथिलाक सम्पूर्ण समाजक घर-घरमे बालिका आ महिला लोकनि पढ़ए नहि लगलीह। ओहिमे अनेक महिला तऽ बादमे विशेष शिक्षित आ सम्मानित बनलीह। हिनका द्वारा देल गेल शिक्षाक ई विशेष महत्व छल जे एक दिस ई महिलाकेँ शिक्षित बनाय ओकराकेँ आत्म गौरव, आत्मनिर्भरता, जाति भावना इत्यादिकेँ पूर्ण विकसित करैत छलीह तऽ दोसर दिस ओकरा कोनो तरहेँ उच्छृंखल अथवा अनैतिक नहि बनऽ देत छलीह, प्रत्युत ओकरामे भारतीय संस्कृति, धर्म ओ आध्यात्मक पवित्र संस्कार भरैत छलीह जाहिसँ ओ अपन कर्तव्यकेँ सुचारु रूपेँ सम्पन्न कऽ सकय। ई पूर्ण रूपेँ सुशील छलीह आ महिलाकेँ सुशील बनबैत छलीह। ओ एक पुरुषक शिक्षा मात्र एक व्यक्तिकेँ शिक्षित करैत अछि, मुदा एक महिला शिक्षाक अभिप्राय होइत छैक ओकर सम्पूर्ण सन्तानक शिक्षा एवं संस्कारक उन्नयन। ओ हिनक जीवन आरम्भसँ लऽ कऽ वर्तमान धरि स्वयं शिक्षाक एहि आदर्श रूपक उदाहरण बनि रहलि। एखनहुँ हिनका प्रभावमे रहनिहारि कोनो महिला आ बालिका हिनक एहि प्रेरणाकेँ ग्रहण कऽ वास्तविक रूपेँ शिक्षित बनैत अछि।

यद्यपि पश्चात् अनेक मैथिल महिलागण विभिन्न क्षेत्रमे विदुषी आ यशस्विनी बनलीह मुदा नारी-समाजक नव चेतनाकेँ अनुप्राणित करबामे हिनके योगदान विशिष्ट मानल जायत। हिनक नाम नव युग-बोधक संस्थापिकाक रूपमे एवं नव चेतनाक सूत्रकारिणी शक्तिक रूपमे सदैव स्मरण कयल जायत। हिनक एहि योगदानकेँ देखैत हिनका प्रबुद्ध महिला वर्गक अग्रणी मानल गेल एवं अनेक

सभा आ सम्मेलनमे हिनक सम्मानो कयल गेल। ओहिमे प्रमुख अछि [illegible] सम्मेलन, [illegible] सम्मेलन, जाहिमे [illegible] हिनका [illegible] गेल।

मुदा ई सभ उपलब्धिक रहितो योगमाया देवीक व्यक्तित्व आ हिनक सेवा, हिनक साहित्यिक कृति आ अन्य उपलब्धि अज्ञात रहल। कारण, जे ई स्वयं ने हिनक सम्पूर्ण परिवार कहियो एकर प्रचार केर चाहलनि। ई सर्वथा स्वार्थ भावनासँ अलिप्त रहि त्यागपूर्ण जीवन बितौलनि आ सतत अनाम साधना कऽ रहल छथि। स्मरणीय अछि जे १९५० मे हिनका बिहार विधान सभाक एम० एल० ए०क हेतु कांग्रेस टिकट प्राप्त होयबाक निश्चित भऽ चुकल छल। किन्तु तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री [illegible] हिनका [illegible] (बिहार विधान सभाक सदस्य) हेतु ई [illegible]। ई सहर्ष स्वीकार [illegible]। हिनक साहित्यिक रचना बहुत भारमे किन्तु प्रकाशित होइत रहल अछि, मुदा अधिकांश अप्रकाशिते अछि [illegible] छन अछि।

हिनक संक्षिप्त जीवनवृत्ति ई अछि। हिनक जन्म [illegible] ई०मे [illegible] मधुबनी जिलाक [illegible] ग्राममे भेल छल। हिनक पिता स्व० शिवकुमार [illegible] विद्वान, धार्मिक एवं साहसी व्यक्ति छलाह। हुनक कन्या [illegible], साहित्यक अभिरुचि एवं अन्य उच्च गुणक ज्ञान [illegible] श्रीमती योगमाया देवी [illegible]। [illegible] हिनका उच्च साहित्यिक ज्ञान उपलब्ध भेलनि। हिनक विवाह [illegible] वर्षमे भेल। विवाह भेलाक बाद पुनः हिनका अपन पति स्व० श्रीलाल दास [illegible] जीवनक अलौकिक प्रेरणा प्राप्त भेलनि, [illegible] ई पतिक दिससँ हिनका पूर्ण सहयोग आ स्वतंत्रता नहि प्राप्त होइतनि तऽ ई कदापि अपन क्रिया-कलापक विस्तार नहि केने रहितथि आने ओ यश एवं पदवी प्राप्त केने रहितथि जे वर्तमानमे हिनका प्राप्त छनि। [illegible] अपन माय आ [illegible] मे ई पर्दा आ [illegible] प्रचार [illegible] गीत [illegible] मैथिली पत्रिका 'भारती'मे प्रकाशित भेल छल।

[illegible] सम्मान है सुभाषिनी।
'घोघ' [illegible] सुभाषिनी।।

हिनक [illegible] अछि। [illegible] विचारकेँ [illegible] हिनक [illegible] अछि।

[शेष पृष्ठ ४६ पर]

मिथिलाक महिला विभूति—
श्रीमती योगमाया देवी

● जगदीश प्रसाद कर्ण

कल्पना करू १९३१ ईस्वीक मिथिलाक आओर ताहूमे ओहि कालक मिथिलाक स्त्री लोकनिक स्थिति केर। ओहिन समयमे जखन कि मैथिल स्त्री लोकनि नितान्त अशिक्षित, पर्दा प्रथाक बन्दिनी आओर सामाजिक राजनीतिक चेतनासँ विहीन छलीह तँ एक महिला महेरियासराय (दरभंगा) क निकट मलौलिया ग्राममे देशक महान नेता स्व० श्री राजेन्द्र प्रसादजी द्वारा स्थापित 'मगन-आश्रम'मे राजेन्द्र बाबूसँ सम्पर्क स्थापित करैत छथि। ओकरा घरोमे कठिनसँ कठिनता छैक। ओकरा दुधपिबा बच्चा छैक कोरामे आ तैयो ओकरा ई धुन सवार भऽ जाइ छैक जे क्रान्ति करी, देश-सेवा करी आ संग-समाजक महिला लोकनिमे सेहो क्रान्ति भावनाक जागृति करी आ सर्वोपरि म० गाँधी एवं राजेन्द्र बाबूक आदेश पर अपन जान अर्पित कऽ दी। राजेन्द्र बाबूक प्रत्यक्ष संगति ओकर बाढ़ती आकांक्षामे आगि भड़का देत छैक आर ओ स्वतंत्रता संग्राममे ताहि समयमे कूदि पड़ैत अछि जखन मिथिलामे, खास कऽ-कऽ नारी समाजमे, अचेतना व्याप्त अछि। ओ सत्याग्रही महिलाक उग्र सदस्या बनि जाइत अछि। शिक्षाक नाम पर ओ मात्र मिडल परीक्षोत्तीर्ण अछि। मुदा अपना माता-पितासँ एवं बाल्यकालमे अपना घरक उच्च [illegible] ओ एहन संस्कार पौने छली जे विदुषी महिला बनली ओ [illegible] छली। सर्वोपरि ओकर साहस आ त्याग-भावना एहेन प्रबल छलैक जे ओ गाँधीजीक ओहि समयक असहयोग आन्दोलन आ सविनय-अवज्ञा आन्दोलनमे भाग लेबासँ अपनाकेँ नहि रोकि सकली। महेरियासराय कचहरीक निकट ओहिना पिकेटिंग करैत महिला सभक दिस बन्दूक तनने ठाढ़ छल तखन भरिसक ओकरा मनमे मोन पड़ल होइ अपना बच्चाकेँ आओर ओ घबड़ा कऽ फिरि जाथि से नहि भेल हो, ओकर आगोर परम्परा नेल होइ। मुदा अमिते सभ अपना भाषा [illegible] एकाकार भऽ जाइत अछि। 'वन्दे मातरम्' आ 'महात्मा गाँधीक जय' केर नारा बुलन्द करैत ओ अपन पैरकेँ एना स्थिर कऽ लैत अछि जेना कि स्वयं काली ओकरा नहि डिगा सकथ। ओ अपन अन्तिमो स्थितिकेँ स्वीकार कऽ लैत अछि आ तकरा बाद ओकरा किछु पता नै रहै छैक। ओ आन्दोलनक अपन कार्यक्रम पुरा करैत अछि। ओकरा भेटैत छैक जेल आ पुन नजरबन्दीक आदेश।

देश, नजरबन्दी आ पुनः नेह सत्याग्रह-सेवा आ बलिदानक कार्यक्रम। ओकर स्वास्थ्य एतेक खराब भऽ जाइ छैक जे ओकर जीवन खतरामे पड़ि जाइत छैक, मुदा ओ नहि रुकैत अछि। ओ श्री राजेन्द्र बाबूक संग भूकम्प पीड़ित जनताक सहायता-कार्यमे कूदि जाइत अछि।

छौ वर्षक पश्चात् येह महिला १९३८ मे मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भऽ कऽ घर आ समाज दुहुकेँ देखा देत अछि जे कठिनता आ बाधाक रहितो महिला कोना पुरुषक समान सब प्रकारक साहस आ कर्मठताक परिचय दऽ सकैत अछि। ओहि कालमे योगमाया देवी मात्र समस्त मिथिलामे सर्वप्रथम महिला छलीह जे सम्पूर्ण विपरीत परिस्थितियोमे मैट्रिक परीक्षा देलनि आ सफलता प्राप्त कऽ अपनाकेँ सुशिक्षिता बनौलनि। एहिसँ बहुतो अन्य स्त्री लोकनि प्रेरणा ग्रहण कैलनि। हिनका स्वयं दूटो पुत्र मात्र भेलनि जे समाजक बच्चा-बच्चीकेँ, खास कऽ बच्ची आ स्त्री लोकनिकेँ पढ़ाबी। ओ अपना निकट आ भूमि-भूमिकेँ अन्यत्र अनेको स्थानमे स्त्री-समाजक बीच खूब काज कैलनि, स्त्री वर्गकेँ शिक्षा आ देश-सेवाक पथ पर आगू बढ़ौलनि, हुनका सबकेँ शिक्षाक वास्तविक मर्म बुझौलनि। तऽ योगमाया देवीक मैट्रिक परीक्षोत्तीर्णता समाजमे एक प्रकारक क्रांति अनलक। हुनक मैट्रिक केनाइ समाजक सम्पूर्ण वर्गकेँ एतेक प्रभावित कैलक जे लोककेँ ई गौरवक वस्तु बुझि पड़लैक। आ से उचित आ स्वाभाविक। एतेक धरि जे ओहि वर्ष जे मैथिल महासभाक सम्मेलन भेल ओ प्रस्ताव पारित कऽ एहि हेतु योगमाया देवीकेँ बधाई देलक एवं हुनक अभिनन्दन कैलक। ई १९३८ ई० केर घटना थीक।

संकल्प ओ एकाग्रता

● डा० [illegible]

[illegible]

'यदि हम देशक सेवा करैत मरि जाइ, तँ एहिमे हमरा गर्व होयत। हमरा विश्वास अछि जे हमर सोनितक एक-एक ठोप राष्ट्र-निर्माणमे सहयोगी होयत संगहि एहिसँ राष्ट्र मजबूत आ प्रगतिशील होयत।'

—इन्दिरा गाँधी

(३० अक्टूबरकेँ उड़ीसाक जनसभामे देल गेल अन्तिम भाषण)

चिरकाल धरि भारतवासीक प्रेरणास्रोत रहयवाली ओहि महान् ज्योतिपुञ्जक प्रति साश्रु श्रद्धांजलि समर्पित—स्वाती

कार्यालय
'स्वाती'
बलभद्रपुर, बेंता रोड
लहेरियासराय
दरभंगा

सम्पादकीय

'स्वाती'क प्रवेशांक प्रस्तुत अछि। हमर प्रयास रहत जे ई पठनीयता आ विचारशीलताक नव प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होअय। आइ जीवनक चाहे जे कौनो क्षेत्र हो, मात्र दार्शनिक वा अकादमीक चिंतने पर्याप्त नहि अपितु पँघ स्तर पर सामाजिक बहस अपेक्षित। संकीर्ण विचारकेँ छोड़ि जीवनकेँ ओहि सम्पूर्णताक संग देखबाक-परखबाक होयत, जे हमरा समाजक स्त्री-पुरुष अपन परिवार, समाज आ सहकर्मीक संग दैनिक जीवन जिबैत छथि—खेत-खरिहानसँ लऽ कल-कारखाना तक, बसक भीड़सँ लऽ राशन-दोकानक आगाँ लागल पँघ पंक्ति तक, शिक्षालय-नियोजनालयसँ लऽ कार्यालय धरि आ हाट-बजारसँ लऽ भनसाघरक चौकठि तक। वस्तुतः साहित्यक सार्थकतो एहीमे अछि। मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहास दुःखद रहल अछि आ भविष्यक हेतु चुनौतीपूर्ण सेहो। एकरा सभकेँ स्वीकारैत डेग उठयबाक एहि साहसमे लेखक, पाठक ओ सहयोगी वर्गक सक्रिय स्नेह आ सहयोग भेटैत रहत तँ स्थिति निश्चय उत्साहवर्द्धक रहत। —कमला चौधरी

मैथिली विभाग
म. द. दा. म. महाविद्यालय
मुजफ्फरपुर

नवम्बर '८४

मैथिली त्रैमासिक

मुजफ्फरपुर

साहित्यिक ओ पारिवारिक पत्रिका

प्रवेशांकक प्रमुख रचनाकार—

लिली रे,

डा० रामदेव झा,

शेफालिका वर्मा,

डा० शान्ति सुमन,

डा० पद्माशा,

डा० मनोरंजन,

डा० सुभाषचन्द्र यादव,

सरस एवं अन्य